



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

लाला जगदलपुरी के साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण चेतना

*¹ चंद्रहास

*¹ पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 5.231

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 25/Jan/2024

Accepted: 23/Feb/2024

सारांश:

प्रकृति मानव जीवन का आधार है। मनुष्य का अस्तित्व जल, वायु, वन, भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। भारतीय साहित्य में प्रकृति को केवल सौंदर्य के रूप में नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति, संवेदना और आध्यात्मिक चेतना के अभिन्न अंग के रूप में देखा गया है। छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध साहित्यकार लाला जगदलपुरी ने अपने साहित्य में बस्तर की प्राकृतिक संपदा, घने वन, नदियों, पर्वतों, वर्षा, वन्यजीवन तथा आदिवासी संस्कृति का अत्यंत सजीव और यथार्थ चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में प्रकृति केवल दृश्य-वर्णन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि मानव जीवन, लोकसंस्कृति और पर्यावरणीय संतुलन का आधार बनकर उभरती है। वे प्रकृति और मनुष्य के सह-अस्तित्व, पारस्परिक निर्भरता तथा पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल देते हैं। उनकी कविताओं और गद्य रचनाओं में जंगल, नदी, वर्षा, मिट्टी, खेत और वन्यजीवन के माध्यम से प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग तथा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व का भाव व्यक्त हुआ है। प्रस्तुत शोध-पत्र में लाला जगदलपुरी के साहित्य में निहित प्रकृति-बोध, पर्यावरण चेतना तथा उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और समकालीन महत्व का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उनका साहित्य वर्तमान पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

*Corresponding Author

चंद्रहास

पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत।

मुख्य शब्द: लाला जगदलपुरी, प्रकृति, पर्यावरण चेतना, बस्तर, आदिवासी संस्कृति, लोकजीवन, वनस्पति, जैवविविधता, हरियाली, पारिस्थितिकी, संरक्षण।

1. प्रस्तावना:

प्रकृति मानव जीवन की आधारशिला है। मनुष्य का संपूर्ण अस्तित्व जल, वायु, भूमि, वन, पर्वत और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। भारतीय साहित्य में प्रकृति को केवल सौंदर्य का विषय न मानकर जीवन, संस्कृति, लोकचेतना तथा मानवीय मूल्यों का अभिन्न अंग माना गया है। आधुनिक समय में जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने पर्यावरणीय संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। ऐसे समय में साहित्य समाज को प्रकृति के प्रति जागरूक, संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध साहित्यकार लाला जगदलपुरी ने अपने साहित्य में बस्तर की प्राकृतिक छटा, घने वन, नदियों, पर्वतों, वन्यजीवन तथा आदिवासी संस्कृति का अत्यंत सजीव और यथार्थ चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन का मूल तत्व है। वे प्रकृति और मनुष्य के सह-अस्तित्व, पारिस्थितिक संतुलन तथा पर्यावरण संरक्षण की भावना को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य लाला जगदलपुरी के साहित्य में निहित प्रकृति-बोध, पर्यावरण चेतना तथा उसके सामाजिक,

सांस्कृतिक और समकालीन महत्व का विश्लेषण करना है। साथ ही यह स्पष्ट करना है कि उनका साहित्य वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

2. लाला जगदलपुरी के साहित्य में प्रकृति का स्वरूप

लाला जगदलपुरी के साहित्य में प्रकृति का चित्रण अत्यंत व्यापक, जीवंत और यथार्थपरक रूप में मिलता है। उनके साहित्य में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं है, बल्कि मानव जीवन, लोकसंस्कृति, आदिवासी परंपराओं और सामाजिक चेतना का अभिन्न अंग है। विशेष रूप से बस्तर अंचल की प्राकृतिक संपदा-घने वन, पर्वत, नदियाँ, झरने, वन्यजीव तथा ऋतु-परिवर्तन-उनकी रचनाओं का प्रमुख आधार हैं। उन्होंने प्रकृति को बाह्य दृश्य के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की ऐसी शक्ति के रूप में चित्रित किया है, जो मनुष्य को संस्कार, संवेदना और जीवन-मूल्यों से जोड़ती है। उनके साहित्य में प्रकृति और मनुष्य का संबंध परस्पर निर्भरता, सह-अस्तित्व और आत्मीयता पर आधारित है। लाला जगदलपुरी की प्रसिद्ध कविता "जीवन का संग्राम जंगली" में प्रकृति के इसी स्वरूप का सशक्त चित्रण मिलता है। वे लिखते हैं-

"इस धरती के राम जंगली,
इसके नमन-प्रणाम जंगली।
वन्याओं-सी वन छायाएँ,
हलवाहे-सा घाम जंगली।
यहाँ प्रभात 'पुष्पधवा'-सा,
मीनाक्षी-सी शाम जंगली।"

इन पंक्तियों में कवि ने जंगल को केवल वृक्षों का समूह नहीं माना है, बल्कि उसे जीवन, संस्कृति और सभ्यता का आधार बताया है। "इस धरती के राम जंगली" कहकर उन्होंने वनवासियों और आदिवासी समाज के जीवन-मूल्यों को सम्मान प्रदान किया है। यहाँ जंगल आस्था, श्रम, सरलता और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन का प्रतीक बनकर उभरता है। "वन्याओं-सी वन छायाएँ" और "मीनाक्षी-सी शाम जंगली" जैसे बिंब बस्तर की प्राकृतिक छटा को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इन उपमानों से स्पष्ट होता है कि कवि प्रकृति को जीवंत, संवेदनशील और सौंदर्यपूर्ण सत्ता के रूप में देखते हैं। लाला जगदलपुरी के साहित्य में वन केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि आदिवासी संस्कृति के संरक्षक हैं। बस्तर का जनजीवन जंगलों से गहराई से जुड़ा हुआ है। लोगों की आजीविका, लोकगीत, लोकनृत्य, पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज तथा धार्मिक आस्थाएँ प्रकृति के इर्द-गिर्द विकसित हुई हैं। इसलिए उनके साहित्य में प्रकृति का चित्रण सांस्कृतिक चेतना से भी जुड़ जाता है। वे यह संदेश देते हैं कि प्रकृति का संरक्षण केवल पर्यावरण की रक्षा नहीं, बल्कि मानव संस्कृति और लोकजीवन की रक्षा भी है। इस प्रकार लाला जगदलपुरी के साहित्य में प्रकृति का स्वरूप बहुआयामी है। उसमें सौंदर्य, संवेदना, लोकजीवन, सांस्कृतिक अस्मिता और पर्यावरणीय चेतना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उनका साहित्य मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देता है तथा यह संदेश देता है कि प्रकृति के बिना मानव जीवन, संस्कृति और सभ्यता की कल्पना संभव नहीं है।

3. नदी और पर्यावरण चेतना

लाला जगदलपुरी के साहित्य में नदी केवल जलधारा नहीं है, बल्कि जीवन, संस्कृति, सभ्यता और पर्यावरण की आधारशिला के रूप में चित्रित हुई है। बस्तर अंचल की नदियाँ वहाँ के जनजीवन, कृषि, वन्यजीवन और आदिवासी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में नदी के प्रति गहरी आत्मीयता, संवेदनशीलता और सम्मान का भाव दिखाई देता है। कवि नदी को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं, क्योंकि वही मानव, पशु-पक्षी, वनस्पतियों तथा संपूर्ण पारिस्थितिकी को जीवन प्रदान करती है। नदी के माध्यम से लाला जगदलपुरी प्रकृति और मनुष्य के अटूट संबंध को स्थापित करते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। उनकी कविता में नदी की व्यथा अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त हुई है-

"कानों से टकराती सिसकियाँ नदी की,
पुरवा जब बहती है रोज़ मुँह-अँधेरे।"

इन पंक्तियों में "नदी की सिसकियाँ" अत्यंत प्रभावशाली प्रतीक है। सामान्यतः नदी को कल-कल बहने वाली, जीवनदायिनी और आनंद प्रदान करने वाली धारा माना जाता है, किंतु यहाँ कवि उसकी पीड़ा और करुण स्वर को सुनता है। यह सिसकी केवल नदी की नहीं, बल्कि उस समूचे प्राकृतिक वातावरण की है, जो मानव की उपेक्षा, प्रदूषण, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से प्रभावित हो रहा है। नदी का मानवीकरण करके कवि यह बताना चाहते हैं कि प्रकृति भी संवेदनशील है और उसके साथ होने वाला अन्याय अंततः मानव जीवन को ही प्रभावित करता है। लाला

जगदलपुरी के साहित्य में नदी केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि लोकजीवन की संस्कृति और सभ्यता की वाहक भी है। बस्तर के गाँवों का जीवन नदियों से जुड़ा हुआ है। कृषि, पेयजल, पशुपालन तथा अनेक लोकपरंपराएँ नदियों पर आधारित हैं। इस कारण नदी का संरक्षण केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है। कवि का संकेत है कि यदि नदियाँ प्रदूषित होंगी या उनका प्राकृतिक प्रवाह बाधित होगा, तो उसका दुष्प्रभाव केवल प्रकृति तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि मानव जीवन, कृषि और जैव-विविधता पर भी पड़ेगा। इस प्रकार लाला जगदलपुरी नदी को प्रकृति की आत्मा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी पर्यावरण चेतना आधुनिक संदर्भों में भी अत्यंत प्रासंगिक है। वे अपनी कविता के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि नदियों की रक्षा करना केवल जल संरक्षण का प्रश्न नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की रक्षा करना है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह नदियों को स्वच्छ, अवरिल और प्रदूषणमुक्त बनाए रखने में अपना सक्रिय योगदान दे।

4. वर्षा, कृषि और पर्यावरण

लाला जगदलपुरी के साहित्य में वर्षा केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं है, बल्कि जीवन, समृद्धि, कृषि और पर्यावरणीय संतुलन का आधार है। बस्तर अंचल का जनजीवन मुख्यतः कृषि और वनों पर आधारित है, इसलिए वर्षा का वहाँ के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में विशेष महत्व है। कवि ने वर्षा को धरती के नवजीवन, किसानों की आशा और प्रकृति की हरियाली का प्रतीक माना है। उनके साहित्य में वर्षा के आगमन के साथ प्रकृति का सौंदर्य, खेतों की उर्वरता, किसानों के चेहरे की मुस्कान और जीवन की नई ऊर्जा का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। वर्षा के माध्यम से वे प्रकृति और मानव जीवन के गहरे संबंध को स्थापित करते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करते हैं। अपनी कविता "मौसम आया पानी का" में लाला जगदलपुरी लिखते हैं-

"बादल गरजे, धूम मची,
गरमी बीती जान बची।
आँखों में हरियाली है,
बातों में खुशहाली है।"

इन पंक्तियों में वर्षा के आगमन से प्रकृति में आए नवजीवन का अत्यंत सुंदर चित्रण है। भीषण गर्मी के बाद बादलों का गरजना और वर्षा का होना केवल मौसम परिवर्तन का संकेत नहीं है, बल्कि समूचे जनजीवन में नई आशा और उत्साह का संचार करता है। "आँखों में हरियाली" और "बातों में खुशहाली" जैसे बिंब यह स्पष्ट करते हैं कि हरियाली केवल खेतों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि लोगों के जीवन, विचार और व्यवहार में भी प्रसन्नता का संचार करती है। कवि के अनुसार पर्यावरण का संतुलन ही समाज की समृद्धि और सुख-शांति का आधार है। लाला जगदलपुरी की छत्तीसगढ़ी कविता में वर्षा और कृषि के संबंध को अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है-

"खेती ल हुसियार बनाय बर,
भुइयाँ म बरसा आये।
सोन बनाय बर माटी ल,
सपना ल सिरतोन बनाय बर।"

इन पंक्तियों में कवि ने वर्षा को धरती की उर्वरता और कृषि की सफलता का मूल आधार माना है। वर्षा के कारण सूखी भूमि उपजाऊ बनती है, खेतों में फसल लहलहाती है और किसान के सपनों को साकार होने का अवसर मिलता है। "सोन बनाय बर माटी

ल" के माध्यम से कवि यह स्पष्ट करते हैं कि वर्षा साधारण मिट्टी को भी सोने के समान मूल्यवान बना देती है। इससे केवल अन्न उत्पादन ही नहीं बढ़ता, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, पशुपालन और जनजीवन भी समृद्ध होता है।

लाला जगदलपुरी के साहित्य में वर्षा का महत्व केवल कृषि तक सीमित नहीं है, बल्कि वह पर्यावरणीय संतुलन, जल संरक्षण और जैव-विविधता से भी जुड़ा हुआ है। वर्षा के कारण नदियाँ, तालाब और जलाशय भरते हैं, वनस्पतियाँ विकसित होती हैं तथा पशु-पक्षियों को भी जीवन मिलता है। इस प्रकार उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि प्रकृति के प्रत्येक तत्व का संरक्षण आवश्यक है, क्योंकि पर्यावरण का संतुलन ही मानव जीवन की समृद्धि और भविष्य की सुरक्षा का आधार है। वर्षा के प्रति उनकी संवेदनशील दृष्टि आज के जलवायु परिवर्तन और जल-संकट के दौर में और भी अधिक प्रासंगिक सिद्ध होती है।

5. प्रकृति और लोकजीवन

लाला जगदलपुरी के साहित्य में प्रकृति और लोकजीवन का संबंध अत्यंत गहरा और आत्मीय है। उन्होंने बस्तर के जनजीवन को प्रकृति के साथ एक जीवंत और अभिन्न इकाई के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में जंगल, नदी, पर्वत, खेत, वर्षा, सूर्य, मिट्टी, वृक्ष तथा पशु-पक्षी केवल प्राकृतिक तत्व नहीं हैं, बल्कि लोकजीवन, संस्कृति, परंपरा और जीवन-मूल्यों के प्रतीक हैं। बस्तर का आदिवासी समाज प्रकृति के बीच अपना जीवन व्यतीत करता है, इसलिए उसकी आजीविका, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, लोकगीत, लोकनृत्य तथा धार्मिक आस्थाएँ प्रकृति से गहराई से जुड़ी हुई हैं। लाला जगदलपुरी ने इस प्राकृतिक और सांस्कृतिक संबंध को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति मानव जीवन की सहचरी बनकर उपस्थित होती है। वर्षा किसानों के लिए समृद्धि का संदेश लाती है, नदियाँ जीवन का आधार बनती हैं, जंगल आजीविका और संस्कृति का संरक्षण करते हैं तथा मिट्टी श्रम, उत्पादन और जीवन की निरंतरता का प्रतीक बन जाती है। प्रकृति का प्रत्येक रूप लोकजीवन के सुख-दुःख, आशा-निराशा और संघर्ष से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। यही कारण है कि उनके साहित्य में प्रकृति का चित्रण केवल सौंदर्य-वर्णन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का भी वाहक बन जाता है। लाला जगदलपुरी यह मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण ही मानव जीवन और लोकसंस्कृति का संरक्षण है। यदि जंगल नष्ट होंगे, नदियाँ प्रदूषित होंगी और पर्यावरण का संतुलन बिगड़ेगा, तो लोकजीवन और सांस्कृतिक परंपराएँ भी प्रभावित होंगी। इसलिए उनका साहित्य प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का संदेश देता है। इस प्रकार लाला जगदलपुरी के साहित्य में प्रकृति और लोकजीवन एक-दूसरे के पूरक हैं तथा उनका साहित्य पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक अस्मिता दोनों के महत्व को समान रूप से स्थापित करता है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लाला जगदलपुरी का साहित्य प्रकृति और पर्यावरण चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उन्होंने बस्तर की प्राकृतिक संपदा, घने जंगलों, नदियों, पर्वतों, वर्षा, मिट्टी तथा वन्यजीवन का अत्यंत सजीव और यथार्थपरक चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं है, बल्कि जीवन, संस्कृति, लोकपरंपरा और मानवीय मूल्यों का आधार है। उन्होंने प्रकृति और मनुष्य के सह-अस्तित्व को अपने साहित्य का प्रमुख आधार बनाया है तथा यह संदेश दिया है कि प्रकृति के बिना मानव जीवन और सभ्यता की कल्पना संभव नहीं है। लाला जगदलपुरी ने अपनी कविताओं में जंगलों को जीवन का आधार, नदियों को जीवनदायिनी शक्ति और वर्षा को कृषि तथा समृद्धि का

स्रोत माना है। उनके साहित्य में प्रकृति के विविध रूपों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, जैव-विविधता, जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संतुलन की भावना स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। साथ ही उन्होंने बस्तर के आदिवासी समाज के प्रकृति-आधारित जीवन को भी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लोकजीवन और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक हैं। आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, तब लाला जगदलपुरी का साहित्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति नई चेतना प्रदान करता है। उनका साहित्य हमें प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का संदेश देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि लाला जगदलपुरी की पर्यावरण-दृष्टि केवल उनके समय तक सीमित नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए समान रूप से प्रासंगिक, प्रेरणादायक तथा मार्गदर्शक है। इसलिए उनके साहित्य का अध्ययन पर्यावरण चेतना और लोकसंस्कृति की समझ को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदर्भ सूची:

1. जगदलपुरी, लाला. (2008). मिमियाती ज़िन्दगी दहाड़ते परिवेश. जगदलपुर: स्थानीय प्रकाशन।
2. जगदलपुरी, लाला. (2005). बस्तर: इतिहास एवं संस्कृति. रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. जगदलपुरी, लाला. (2007). बस्तर की लोक कथाएँ. रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. जगदलपुरी, लाला. (2006). बस्तर की लोक कला एवं संस्कृति. रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. शर्मा, रामविलास. (2008). भारतीय साहित्य और संस्कृति. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद. (2014). साहित्य सहचर. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. शुक्ल, रामचन्द्र. (2017). हिंदी साहित्य का इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
8. पाण्डेय, मैनेजर. (2010). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
9. वर्मा, रामकुमार. (2012). हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
10. भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय. (2023). भारत में पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास. नई दिल्ली: भारत सरकार।